वर्ष 44 अंक : 4 31.8.2021 मंगलवार (जुलाई-अगस्त) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00
महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥

शिक्षापत्री, ११६

'अनिर्देश' में – युगपुरुष ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के पवित्र चरणारविंद का पूजन...

प.पू. स्वामीजी के अंतिम दर्शनार्थ मुक्त समाज...

समय के साथ-समय के बाद, रहता है जो सबके साथ
वह तेरा सहारा है, ओ मेरे नाथ...

स्वामीजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं, पुकार करें हम, प्रत्यक्ष वो होंगे...

प्रत्यक्ष स्वरूपों के श्रीमुख से सुनते आये हैं –
जैसे **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** के तीन कृपापात्र शिष्य
अनादि महामुक्त भगतजी महाराज, कृष्णजी अदा और जागास्वामी!
इसी प्रकार **गुरुहरि योगीजी महाराज** को प्रगटाये
गुरुहरि काकाजी–पप्पाजी और हरिप्रसादस्वामीजी!
इनकी तपस्या, प्रेरणा और परवरिश से
योगी परिवार फलाफूला और 'गुणातीत समाज' अस्तित्व में आया।

गुरुहरि काकाजी महाराज ने **7 मार्च 1986** को **68** साल की आयु में अचानक स्वधामगमन किया। गुणातीत समाज के सर्जक का यूं ब्रह्मलीन होना एक आघात था। कोई सोच भी नहीं सकता था कि स्थूल रूप से वे इतनी जल्दी विदा लेंगे। लेकिन, गुरुहरि पप्पाजी और गुरुहरि स्वामीजी की हूँफ मिली और प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल जैसे ज्योर्तिधरों द्वारा मुक्तों में नवचेतना जगी... गुणातीत समाज को गुरुहरि काकाजी की स्मृतियों में पिरो कर, उनके सिद्धांतों पर चलाने का प्रयास करते हुए **28 मई 2006** को **गुरुहरि पप्पाजी** ने **91** साल की आयु में स्वतंत्र रूप से देहत्याग किया और... गुणातीत समाज की **द्वितीय विभूति** विलीन हुई।

तब अंतर से एक ही पुकार उठी कि अब धरती के मंगल और गुणातीत समाज के शिरछत्र **गुरुहरि हरिप्रसादस्वामीजी** की छत्रछाया वर्षों तक हम पर बनी रहे।

प.पू. स्वामीजी का स्वास्थ्य चार-पाँच वर्ष से नरम-गरम चल रहा था, डॉक्टर्स की सेवा ग्रहण करने वे कई बार मुंबई के 'लीलावती अस्पताल' भी गये... किडनी की तकलीफ के कारण पिछले छः महीने से सप्ताह में दो-दो बार डायालिसिस भी कराना पड़ रहा था। **24 जुलाई** को गुरुपूर्णिमा निमित्त घरेलू सभा में अपने अलौकिक दर्शन और आशीर्वाद से सभी को तृप्त किया। पर, जैसे कि गुजराती भजन की एक पंक्ति अकसर **प.पू. गुरुजी** के स्वमुख से सुनी है –

न जाण्युं जानकीनाथे सवारे शुं थवानुं छे?

यूं 26 जुलाई की दोपहर को भोजन द्वारा संतों-मुक्तों का भाव ग्रहण करके प.पू. स्वामीजी आराम में गये। करीब साढ़े चार बजे बाथरूम जाकर लौटे कि अचानक उन्होंने बेहोशी ग्रहण करी। डॉक्टर्स की सलाह पर तुरंत ही वडोदरा के **'भाईलाल अमीन जनरल अस्पताल'** के आई.सी.यु. युनिट में ट्रीटमेन्ट के लिये ले जाये गये। **पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी**, संतमंडल एवं अंतेवासी सेवकों ने वॉट्सऍप द्वारा प.पू. स्वामीजी के निरामय स्वास्थ्य हेतु सभी को धुन-भजन करने कहा। पर, **प.पू. स्वामीजी ने 26 जुलाई रात्रि 11:00 बजे 87 वर्ष की आयु में अक्षरधामगमन किया!**

प्रत्येक युगपुरुष किसी विशिष्ट युगकार्य के उद्देश्य से धरा को पावन करने पधारते हैं। गुजरात के '**आसोज**' गाँव में **पू. गोपालदासभाई** और **पू. काशीबा** के घर जन्मे युगपुरुष–हमारे प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी **'प्रभुदासभाई'** के रूप में **प.पू. बापा के सेक्रेटरी** बनकर पत्र व्यवहार की सेवा करते थे। प.पू. बापा की आज्ञा और वचन में अपनी वृत्ति को ढालना उनका स्वभाव था। एक साधक का जीवन जीने की तालीम देने हेतु 1957 में प.पू. बापा ने उन्हें तीन आज्ञा दी –

1. नीचे फर्श पर सोना।
2. ठंडे पानी से स्नान करना।
3. भोजन एकरस करके (मिला कर) खाना।

गुरु से अतिशय प्रीति और दृढ़ संबंध करने के लिये 'प्रभुदासभाई' उनकी छोटी से छोटी आज्ञा बखूबी पालते। यही कारण था कि प.पू. बापा भी उन पर खूब ढले थे। उन्हें सेवा सौंपने के बाद प.पू. बापा निश्चिंत होते और कई युवकों-संतों को उनका समागम करने की आज्ञा करते।

गोंडल मंदिर में रहते हुए 'प्रभुदासभाई' न केवल प.पू. बापा की डाक-विचरण की सेवा में तत्पर रहते, बल्कि हरिभक्तों की सेवा-चाकरी, उनके ठहरने की व्यवस्था, धर्मादे का हिसाब, मंदिर के निजी व्यवहार जैसी सेवाओं के साथ-साथ अवकाश मिलते ही मंदिर में झाड़ू लगाना, साफ़-सफ़ाई करना, बर्तन मांझना, रसोई में हाथ बँटाने जैसी छोटी-बड़ी सेवायें भी करते। प.पू. बापा की सेवा से निवृत्त होकर, देर रात्रि को संतों-युवकों के साथ गोष्ठि करके सबके हृदय में प.पू. बापा का माहात्म्य भरते-अध्यात्म सिंचन करते। यूं उन्होंने कइयों को प्रभु के मार्ग पर अग्रसर किया।

'प्रभुदासभाई' की प्रभु प्राप्ति की लगन देख कर, प.पू. बापा ने 1965 में उन्हें साधु की दीक्षा देने का निर्णय लिया। **'प्रभुदासभाई' अपने माता-पिता के एक ही पुत्र थे,** सो **पू. काशीबा उन्हें साधु बनने की आज्ञा नहीं दे रही थीं।** लेकिन, **प.पू. बापा की मरज़ी को जानते हुए गुरुहरि काकाजी, पू. प्रभुदासभाई को साथ लेकर पू. काशीबा से मिलने के लिये ख़ास 'आसोज' गये और प.पू. बापा की महिमा गाकर पू. काशीबा को राज़ी कर लिया।**

अंततः 5 अक्तुबर 1965 दशहरे के महामंगलकारी दिन प.पू. बापा ने पार्षदी दीक्षा दी और 9 अक्तुबर **शरदपूर्णिमा के दिन** भागवती दीक्षा प्रदान करते हुए **'साधु हरिप्रसाददास'** नाम दिया। **प.पू. बापा** इतने उमंग-उत्साह में थे कि दीक्षा विधि के समय बैंड-बाजा मंगवाया और दीक्षा देते हुए प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी पर आशिष वर्षा की–

जैसे डभाण में बड़ा यज्ञ करके और हज़ारों ब्राह्मणों को भोजन करा कर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी को दीक्षा दी थी, यूं ये प्रभुदास को साधु की दीक्षा दी जा रही है। शास्त्रीजी महाराज ने प्रमुखस्वामी को ऐसे बनाये, तो सभी ने सारे सत्संग को संभाल लिया। ऐसे ही प्रभुदास प्रमुखस्वामी जैसा बनें और सभी सत्संग करें।

दूसरे 51 नये युवकों को दीक्षा दें, ऐसा दूसरा आशीर्वाद देता हूँ।

जैसे हमारे महंतस्वामी भगत बने, तो अन्य कितने साधु बने। ऐसे ही हमारे प्रभुदासभाई साधु बने, तो वे हज़ारों को एकांतिक बनायेंगे।

यूँ इस (अक्षर) देरी का आशीर्वाद है कि वे (प्रभुदासभाई) स्वयं सुखी हुए हैं, तो अन्यों को भी सुखी करेंगे और कई कितने अक्षरधाम में जायेंगे, यह अंतर से मेरा दूसरा आशीर्वाद है...

ऐसे आशीर्वाद से प.पू. बापा ने मानो पुष्टि करी कि श्रीजी महाराज ने अपने संतों द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहने का जो अमूल्य वरदान दिया, वह उनके संतों द्वारा बरक़रार ही रहने वाला है। कई बार भक्तगण वेग में अपने प्रगट स्वरूप को भगवान या भगवान के बराबर कहते हैं। प.पू. बापा की अद्वितीय प्रसन्नता के कारण, **काकाजी** ऐसी अलौकिक भूमिका में न ही अटके - न ही कभी झूलें। वे बेहिचक कहते –

भगवान स्वामिनारायण अद्वितीय! ऐसा कोई हो ही नहीं सकता। मैं उनका बेटा ज़रूर हूँ।

दीक्षा लेने के बाद 'अन्नकूट' तक **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** जब गोंडल मंदिर में ही ठहरे थे, तब गुणातीत रीति-नीति और स्थिति का मर्म समझाते हुए **गुरुहरि काकाजी** ने उन्हें निम्न सूचन किया–

'अब आप मुंबई जाओगे; वहाँ मुझ से प्रीति वाला मंडल है। वे आपको आगे करेंगे... लेकिन आप महंतस्वामीजी को ही आगे रखना... हमेशा नंबर 'टु' ही रहना।'

प.पू. स्वामीजी ने गुरुहरि काकाजी का यह वचन पूर्णतः शिरोधार्य किया। लेकिन, दीक्षा लेने के सात महीने बाद ही **28 मई 1966 को संस्था ने एक ओर विमुख करार दिया, तो दूसरी ओर गुरुवर्य योगीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी और गुरुहरि पप्पाजी की छत्रछाया में उन्हें अपने सम्मुख रखा। प.पू. स्वामीजी 39 संतों के साथ सोखड़ा के पुराने मंदिर में रहने लगे।** वहीं स्थित रहकर गुरुदेव योगीजी महाराज की स्मृति में डूबे रहे और साथी संतों को प.पू. बापा की रीति की शिक्षा देते रहे।

1971 में प.पू. बापा ने स्वधामगमन किया। तत्पश्चात् ही प.पू. स्वामीजी ने सत्संग के विकास हेतु विचरण करना प्रारंभ किया। आज सब खूब सानूकूल दिखता है, चहुँ ओर खूब समृद्धि-संपत्ति दिखती है, लेकिन इसके पीछे प.पू. स्वामीजी ने अपने लहू का जो पानी किया है, वह अवर्णनीय है। करोड़पति का बंगला हो या गरीब की झोंपड़ी, बस प.पू. बापा की ओर दृष्टि रख कर एक सरीखी भावना से देश-विदेश में कल्याण यात्राएँ की। भक्तों को राज़ी करने हेतु अपनी देह का अनादर करके उसे चंदन की भाँति घिस दिया। कल्पना ना कर सकें, ऐसा और इतना लगातार विचरण किया। फलस्वरूप संतों, सहिष्णु भाइयों, अंबरीषों और बहनों का आत्मीय समाज तैयार हुआ। प.पू. बापा की अनुवृत्ति, अभिप्राय एवं रीति-नीति में प.पू. स्वामीजी ने चैतन्यों को गढ़ा। भक्तों को अपनी देह से अधिक प्रिय, अपने प्राण के समान माना। कई बार कई मुक्त उनकी उपेक्षा भी करते या साथ न देते, फिर भी प.पू. बापा के संबंध से उन्हें खूब बड़ा मानते। सहपरिवार भक्तों का जीवन केवल प्रभुमय बने, इसलिये उनके अनुरूप वर्त कर उनके अंतर में स्थान लिया। तभी तो आबाल, युवा, वृद्ध या नर-नारी सभी को दृढ़ विश्वास हुआ कि 'ये स्वामी मेरे हैं।' और... मुक्त समाज प.पू. स्वामीजी की पामेश्वरी शक्ति की ओर खींचा चला आया। प.पू. स्वामीजी ने प.पू. बापा को सांगोपांग धारण किया होगा, तभी वे ऐसा बेमिसाल कार्य कर सके।

उनकी प्रतिभा खूब ही ऊर्जस्वी और बहुआयामी थी।

एक ओर उनकी कार्यपद्धति, त्वरित निर्णय शक्ति, अद्‌भुत गतिशक्ति, अस्खलित विचरण, सचोट भविष्यकथन, विचक्षण दीर्घदृष्टि और कड़क नज़र में **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** की प्रतिभा का दर्शन होता,
तो दूसरी ओर संतों-मुक्तों को संभालते हुए जब वात्सल्य का प्रवाह बहाते, तो करोड़ों माँ की ममता को भुलाते **प.पू. बापा** की झलक दिखती।

प.पू. बापा हमेशा कहते – ***युवक मेरा हृदय हैं!***

अपने गुरु के इस वचन को जीवनध्येय बना कर युवा पीढ़ी में संस्कारों का सिंचन करने का बीड़ा उठा कर, उन्हें सन्मार्ग पर अग्रसर किया। कलियुग के विपरीत माहौल में विषय व व्यसन रहित बना कर, प्रभु के लिये जीवन जीने के मार्ग पर चलने वाले युवकों का अद्‌भुत समाज तैयार किया। फलतः प.पू. स्वामीजी की आँख के ईशारे पर, सब कुछ कुर्बान करके कइयों ने दीक्षा भी ली। संबंध में आये सभी प.पू. स्वामीजी के बल से अपनी प्रकृति और स्वभाव का रूपांतर करवाने की चाहना से भजन का सहारा लेने लगे। प.पू. स्वामीजी के प्रति उनके अतिशय प्रेम, समर्पण और संबंध की यही सच्ची प्रतीति कही जाये और यही प.पू. स्वामीजी की अनोखी प्रतिभा का दर्शन है। ऐसे आत्मीय समाज के प्राणाधार होकर भी, **प.पू. बापा और गुरुहरि काकाजी का वचन का सदैव स्मरण करते हुए** प.पू. स्वामीजी एक **साधक की अदा से ही जिये।** 13 अगस्त 2016 को **ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज** ने जब देह त्याग किया, तब प.पू. स्वामीजी कॅनेडा पहुँचे ही थे। तुरंत ही प.पू. स्वामीजी भारत लौटे और सारंगपुर पहुँच कर प.पू. प्रमुखस्वामीजी का अंतिम दर्शन करने गये। हार्ट की सर्जरी होने के बावजूद प.पू. प्रमुखस्वामीजी को भावांजलि देते हुए पाँच दंडवत् प्रणाम किये और एक बालक की अदा से प्रार्थना की–
प्रमुखस्वामी महाराज! आप हम सभी के मावतर (माँ-बाप) हैं... शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद का अद्‌भुत स्वरूप हो। हम सभी के प्राणाधार हो... आप अद्‌भुत पुरुष हो। हमारा इतना फर्ज़ है कि आपके आदेश और आशीर्वाद के मुताबिक किसी भी संजोग में संप, सुहृदभाव, एकता से, दास के दास बन कर जियें। फलस्वरूप शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और आपका परिश्रम सफल हो...

प.पू. स्वामीजी का अंतर्हार्द था कि 'दास का दास बनना है...' आशीर्दान देते हुए वे अकसर कहते –
दास का दास होकर, रहे जो सत्संग में; भक्ति उसकी नेक जानूँ मैं, नाचूँगा उसकी ताल में...
दासत्व के ऐसे मूर्तस्वरूप प.पू. स्वामीजी के अस्वस्थ होने का समाचार पाकर, **26 जुलाई** की रात को प.पू. गुरुजी ने जब **प.पू. प्रेमस्वामीजी** से फोन पर बात की, तब उन्होंने प.पू. स्वामीजी के देहत्याग का अंदेशा देते हुए कहा – *आप कल सुबह हरिधाम आ ही जाइये।*

अतः **प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामी** एवं कुछ मुक्तों के साथ **27 जुलाई** की सुबह विस्तारा एयरलाइन्स से अमदावाद एयरपोर्ट उतर कर, वडोदरा-हरिधाम जाने के लिये निकले। दोपहर करीब डेढ़ बजे हरिधाम पहुँच कर, **'अनिर्देश'** में प.पू. स्वामीजी के पार्थिव देह के आने की प्रतीक्षा में बैठ गये।

अस्पताल से हरिधाम तक के मार्ग में हरिभक्तों का तांता लगा था। यह सारा नज़ारा दर्शाता था कि प.पू. स्वामीजी ने अपने आश्रितों को कैसा अलौकिक प्रेम दिया होगा!

दोपहर दो बजे के करीब एम्बयुलन्स हरिधाम मंदिर पहुँची। द्वार के आगे गुलाब के फूलों का गलीचा बनाया था। 'स्वामिनारायण' धुन के नाद के साथ एम्बयुलन्स को 'अनिर्देश' ले जाया गया। वहाँ भारी हृदय एवं नम आँखों से वडील संतों एवं वडील मुक्तों ने प.पू. स्वामीजी के चरणारविंद का चंदन से पूजन किया। प.पू. स्वामीजी का दर्शन-पूजन करने के बाद, प.पू. प्रेमस्वामीजी एवं प.पू. दासस्वामीजी की सलाह पर, प.पू. स्वामीजी की अंतिम संस्कार विधि पर 31 जुलाई को गुजरात पुनः आना तय करके, प.पू. गुरुजी उसी दिन रात को 11.00 बजे दिल्ली मंदिर पहुँच गये।

चूँकि विदेश के मुक्तों को ध्यान में रखकर अन्य चार दिन प.पू. स्वामीजी के पार्थिव देह को दर्शन हेतु रखना था, सो **'योगी प्रार्थना हॉल'** में वातानुकूल कॅबिन में उन्हें स्वर्ण आसन पर विराजित किया। **28** की सुबह से प्रदेश-मंडल और विदेश के हरिभक्त दर्शन करने आने लगे। **31 जुलाई तक तकरीबन दो लाख मुक्त दर्शनार्थ आये। फिर भी कोविड की गाईड लाईन्स के अनुरुप भक्तों की सभी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया। कल्पना करें कि एक ओर विरह से भरा दिल और दिमाग़ हो, पर दूसरी ओर मेरे गुरु को क्या पसंद है यह ध्यान में रखना, इसे सही अर्थ में गुरुभक्ति कहा जाये। हरिधाम का स्टाफ बखूबी यह निभा रहा था। कोटि-कोटि नमन है उनकी सेवा को।**

इंटरनेट के माध्यम से भी लाखों लोग घर बैठ कर रोज़ सारा दिन लाइव दर्शन करते रहे। प्राणप्रिय प.पू. स्वामीजी के समक्ष शिस्तबद्ध बैठे मुक्त आँखों में अश्रु भरे ज़ोर-ज़ोर से धुन-भजन कर रहे थे। प.पू. स्वामीजी के अतिशय माहात्म्य का यह दर्शन था।

प.पू. स्वामीजी की अंत्येष्टि के लिये **31 जुलाई** की सुबह करीब सवा ग्यारह बजे प.पू. गुरुजी 70 मुक्तों के साथ दिल्ली से फ्लाईट द्वारा 1:50 को अमदावाद के लिये रवाना हुए।

जैसे ही फ्लाईट टेक ऑफ हुई, तो प.पू. गुरुजी ने सहजानंदस्वामी महाराज की जय – हरिप्रसादस्वामी महाराज की जय बुलवाई। दोपहर 3:15 बजे फ्लाईट अमदावाद पहुँची। यहाँ से प.पू. गुरुजी सीधा अनुपम मिशन-मोगरी गये।

अनुपम मिशन–'उपासना' में संतभगवंत साहेबजी से मिल कर, प.पू. गुरुजी अनुपम मिशन द्वारा संचालित 'विठ्ठलभाई अंबालाल मुंशी नॅचर क्योर सेन्टर' में ठहरने गये।

संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा एवं प.पू. अश्विनभाई की निगरानी में **पू. जीतूभाई पोपट** एवं उनकी धर्मपत्नी **पू. ज्योति दीदी** ने रहने और भोजन की जो इतनी अच्छी व्यवस्था की थी, उसमें संतभगवंत साहेबजी की प्रसन्नता प्राप्त करने की सुवास सभी को महसूस होती थी। इन दोनों की भक्ति को खूब नमन!

अगले दिन **1 अगस्त** की दोपहर 12:00 बजे अनुपम मिशन में प्रसाद लेने के बाद दोपहर एक बजे हरिधाम पहुँचे। मुख्य मंदिर के समक्ष प.पू. स्वामीजी की अंत्येष्टि की व्यवस्था की गई थी। **फूलों से सजी पालकी में प.पू. स्वामीजी को विराजमान करके,** करीब दो बजे **'अनिर्देश' से अंतिम यात्रा का आरंभ हुआ।** सुसज्जित पालकी में बिराजे प.पू. स्वामीजी का दर्शन करते हुए ऐसा लगता ही नहीं था कि अब स्थूल देह में वे मौज़ूद नहीं हैं। दिल का एक कोना कहता था कि हमेशा की तरह अभी हाथ जोड़ कर वे जय स्वामिनारायण

हरिधाम की कण-कण जब तक ब्रह्मस्वरूप न हो जाये,
तब तक स्वामीजी धरती से जा ही नहीं सकते...
– प.पू. गुरुजी

स्वामीजी गये ही नहीं हैं। हम ये दिल से मानेंगे, तो वे स्वयं हमें प्रतीति करा देंगे...

– प.पू. गुरुजी

हे स्वामी! अखंड तुम हो, प्रगट तुम हो
सभी के दिल में बैठे हो, दृढ़ करवाना विश्वास...

स्मरण में हम रहें तल्लीन, जैसे जल में रहती मीन,
तुम करवाना मुमकिन, ओ मेरे नाथ...

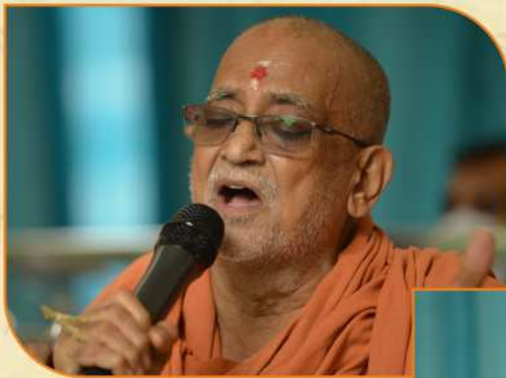

साधुता और दासत्व जिसके पास है, ऐसे साधु में प्रभु अखंड विराजमान होते हैं।
हरिप्रसादस्वामीजी ऐसे प्रभुधारक संत थे।

– संतभगवंत साहेबजी

साहेब के वचन से पाँच एक होकर करोगे, तो फत्तेह है...
– प.पू. गुरुजी

जैसे सूरज का ढलना, होती है बस एक भ्रमणा,
ऐसी ही घटना तुम्हारा जग से बिदा होना...

स्वामीजी का युगकार्य जो चलता था, उसे सवाया बढ़ाना है...
– प.पू. गुरुजी

स्वामी ने जिस अद्‌भुत समाज की रचना की,
उसे खूब अंनत गुणा ऊँचा करना है...
– संतभगवंत साहेबजी

गुणातीत साधुओं के माहात्म्य का डंका बजे, इस हेतु हमें कटिबद्ध होना है...
– संतभगवंत साहेबजी

करेंगे... स्वामिनारायण धुन के साथ हरिधाम के संत, सहिष्णु भाई एवं अंबरीष इस यात्रा में शामिल हुए। मंदिर की प्रदक्षिणा करने के पश्चात् वेदी के समक्ष पालकी स्थापित की गई।

वहाँ संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. शांतिभाई साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. शास्त्रीस्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी एवं वडील संतों, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, गुणातीत ज्योत के भाइयों तथा गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी साहेब व उप मुख्यमंत्री श्री नितिनभाई पटेल इत्यादि ने प.पू. स्वामीजी का पूजन करके हार अर्पण किया।

तत्पश्चात् वेदिका के पास प.पू. स्वामीजी को लाया गया। बारिश का मौसम था, सो मूवेबल शॅड बनाया था, जिसके चारों ओर पर्दे लगाये हुए थे। परंतु, इस समय भी प.पू. स्वामीजी ने प्रकृति को अपने वश किया था। सोखड़ा के इर्दगिर्द तेज़ बारिश हुई, लेकिन यहाँ नहीं हुई बल्कि अच्छी धूप निकली हुई थी। अंतिम संस्कार की तैयारी करके शॅड हटा दिया। वेदिका के चहुँ ओर प्रार्थना लिखी थी – 'दास का दास बनानाजी!' शास्त्रोक्त विधि के अनुसार **प.पू. प्रेमस्वामीजी, प.पू. प्रबोधजीवनस्वामीजी, प.पू. संतवल्लभस्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी, प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी, पू. फुआ एवं पू. अशोकभाई ने प.पू. स्वामीजी को मुखाग्नि दी। अग्निदाह होते ही वैश्वानल फैल गया।** स्वामिनारायण धुन एवं 'हे महाराज, हे स्वामी दास का दास बनानाजी' की प्रार्थना के साथ उपस्थित मुक्तों एवं इटंरनेट के माध्यम से दर्शन कर रहे आश्रितों ने अश्रुओं का अभिषेक देकर स्वामीजी को स्थूल रूप से विदाई दी... क्योंकि **प.पू. स्वामीजी** ने स्वयं निम्न कॉल दिया है–

दोबारा आऊँगा... हम मिलने वाले हैं। मेरा एक स्वभाव है कि तुम मुझे मिलो या न मिलो, लेकिन मैं तुम्हें मिलने आने वाला ही हूँ। तुम्हें ढूँढ कर मिलने आऊँगा...

अंत्येष्टि संपन्न होते ही देश-विदेश के सभी भक्तों को संबोधित करते हुए, **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद दिया और **प.पू. स्वामीजी के आध्यात्मिक वारिसदारों** की घोषणा की –

हमारे विट्ठलदास, अशोकभाई, दिनकरभाई, गुरुजी, निर्मलस्वामी, शास्त्रीस्वामी, दासस्वामी सभी की हाज़िरी में-सभी की सम्मति से, संतवल्लभस्वामी, सर्वमंगलस्वामी इन सभी संतों की प्रेरणा, आशीर्वाद और सभी की सर्व सम्मति से हमारे हरिधाम-योगी डिवाईन सोसाईटी को प्रेमस्वामी और प्रबोधजीवनस्वामी लीड करेंगे। प्रेमस्वामी के नेतृत्व में प्रबोधजीवनस्वामी, त्यागवल्लभस्वामी, अशोकभाई और विट्ठलदास – जहाँ पाँच वहाँ परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि स्वामी ने जिस अद्‌भुत समाज की रचना की, गुजराती में कहें तो '50 साल से लहू का पानी किया... उन्होंने जो कसनी सही, परिश्रम किया,' उसे खूब अनंत गुणा ऊँचा करना है। आपके द्वारा ब्रह्मांड में डंका बजे। हम सभी की सम्मति है। आज हम सब प्रतिज्ञा करें कि ***प्रेमस्वामी, प्रबोधस्वामी, त्यागवल्लभस्वामी, अशोकभाई और विट्ठलदास*** *के नेतृत्व में हम सर्व प्रकार से समर्पित होकर, उनकी आज्ञा से भक्ति करेंगे... समग्र सत्संगी समाज में 'संप, सुहृदभाव, एकता' से जीकर, समग्र विश्व में स्वामिनारायण भगवान की सर्वोपरिता, शास्त्रीजी महाराज–योगीजी महाराज द्वारा स्थापित शुद्ध उपासना और इन गुणातीत साधुओं के माहात्म्य का डंका बजे, इस हेतु हमें कटिबद्ध होना है उसके लिये दो मिनिट धुन करो... स्वामी खूब राज़ी होते*

होंगे, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजली है...

तत्पश्चात् संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से पू. विठ्ठलदास फुआ ने संबोधन किया। स्वरूपों एवं वडील संतों का आभार प्रकट करते हुए **प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी** ने प.पू. गुरुजी से आशिष याचना की। संतभगवंत साहेबजी द्वारा किये संकल्प की पुष्टि करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया–

*बापा ने साहेब को आशीर्वाद दिया था – तुम संकल्प न करो, तो वो तुम्हारी खोट और पूरा न करूँ तो वो मेरी खोट! उन साहेब ने आज संकल्प किया है कि स्वामीजी का युगकार्य जो चलता था, वह हमें प्रेमस्वामी, प्रबोधस्वामी, त्यागवल्लभस्वामी, संतस्वामी वगैरह जो बड़े संत हैं, उनकी छत्रछाया में सवाया बढ़ाना है। साहेब ने संकल्प किया है, सो '**सत्कर्म**' के रूप में साहेब के वचन से पाँच एक होकर करोगे, तो फत्तेह है। ऐसा सत्कर्म हमारे प्रारब्ध, प्रकृति और स्वभाव को टाल देता है। हमारे लिये प्रारब्ध तो होता नहीं, क्योंकि जब से स्वामीजी मिले, तब से प्रारब्ध ख़ाक हो गये। लेकिन, जो प्रकृति कई बार झलक जाती है, वह भी निर्मूल हो जाये-जड़ से चली जाये ऐसा साहेब आशीर्वाद दें...*

इस प्रार्थना द्वारा प.पू. गुरुजी ने प्रच्छन्न रूप से मानो एक मार्गदर्शन दिया कि प.पू. स्वामीजी एक ऐसी दिव्य विभूति थीं कि जिन्होंने अपने गुरु योगीजी महाराज का बल और गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की छत्रछाया पाकर सभी को प्रभु बाँटने का अद्‌भुत कार्य किया। सो, उनका यह भगीरथ कार्य गतिशील रखने में हमारी कोई सोच, मान्यता, इच्छा या महत्त्वाकांक्षा तनिक भी आड़े न आये और जैसे कि प.पू. स्वामीजी हमेशा कहते – *तू हरि... मैं सेवक! तू ही... तू ही!* यही रटण होता रहे।

अंत में प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी का सूचन पाकर, प.पू. स्वामीजी की स्मृतियों को संजो कर सभी ने वहाँ से प्रस्थान किया। प.पू. गुरुजी हरिधाम से सीधा अनुपम मिशन – संतभगवंत साहेबजी के निवास स्थान–**'उपासना'** गये। वहीं पर स्नानविधि की और रात को 8:30 बजे **'गुणातीत ज्योत'** गये। **गुरुहरि पप्पाजी** के निवास स्थान **'प्रभुकृपा'** का दर्शन करके **'परम प्रकाश' में प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. विज्ञानस्वामीजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** के साथ प्रसाद लेकर फिर **'उपासना'** गये। वहाँ से देर रात्रि करीब सवा बजे 'नॅचर क्योर' लौटे।

अगले दिन 2 **अगस्त** की सुबह करीब साढ़े आठ बजे प.पू. अश्विनभाई, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं मुक्त 'नॅचर क्योर' आये। प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में सभी ने धुन का लाभ लिया। नाश्ता करने के बाद **प.पू. गुरुजी** ने प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं उनके साथ आये भाइयों को 'राखी' बाँधी। तत्पश्चात् इन्होंने मुंबई-पवई के लिये प्रस्थान किया।

प.पू. गुरुजी एवं सभी **गुरुहरि पप्पाजी के समाधि स्थल 'शाश्वत् धाम'** का दर्शन करने गये। वहाँ शिकंजी का प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामी एवं कुछ मुक्तों के साथ विद्यानगर निवासी **पू. निमेशभाई शाह** के **'गुरुजी फार्म'** गये। वहाँ धुन की और **पू. सुहृदस्वामी ने नीम का पौधा लगाया।** यहाँ से निकल कर अनुपम मिशन में नवनिर्मित मंदिर में श्री ठाकुरजी का दर्शन करने गये। **प.पू. गुरुजी** एवं संतों ने **'राजभोग आरती'** की। पश्चात् सभी **गुरुहरि काकाजी** एवं **ब्रह्मस्वरूपीणी सोनाबा** के समाधि स्थान पर दर्शन व

प्रदक्षिणा करके संतभगवंत साहेब के निवास स्थान **'उपासना'** के बाहर एकत्र हुए। काँच के कॅबिन में विराजमान **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्दान दिया–

...आप सब आये। किसी के लग्न में जाये या न जायें, कोई फर्क़ नहीं पड़ता। यदि जायें तो आनंद होता है। लेकिन, दुःख के समय जाना बहुत ज़रूरी होता है। ऐसे समय पर आप सब आये, तो प्रेमस्वामी और संतों को बहुत हूँफ मिली, सेवा हो गई।

***स्वामिनारायण भगवान** कहते हैं– मैं तप, व्रत, दान इन सबसे राज़ी हूँ। लेकिन, मेरे साधु-भक्तों को भीतर से हूँफ दो, उससे मैं ज़्यादा राज़ी होता हूँ। गुरुजी के संग से आप लोगों को भगवान की प्रसन्नता मिल गई।*

*हरिप्रसादस्वामी के टच में तो आप में से बहुत कम लोग होंगे, लेकिन गुरुजी द्वारा भरे माहात्म्य, हेत, प्रेम और आशीर्वाद से आप सबके भीतर पप्पाजी, काकाजी, हरिप्रसादस्वामी के प्रति प्रभु का भाव है। उस भाव का दर्शन हुआ। ऐसे समय में तत्काल फ्लाईट से आना कोई सामान्य बात नहीं है। मुझे पप्पू ने बताया कि कइयों का तो एक घंटा पहले पक्का हुआ कि जाना है। ये तो दिल्ली से **'चार्टर्ड एयर बस'** में आने जैसा हो गया। आपको गुरुजी के प्रति इतना प्रेम और भाव है, गुरुजी को प्रभु का स्वरूप मानते हो, तो बिना किसी हिचक के आज्ञा पालने निकल पड़े, वो श्रेष्ठ भक्ति हो गई।*

*योगीजी महाराज कहते थे– कोई सोने का मंदिर बनाये, करोड़ों रुपये दान करे, सत्संग का विकास करे, लेकिन ऐसे साधु की आज्ञा पाले, वो मेरे लिये अधिक है। आपने ऐसा काम किया है। **गुरुजी दासत्वभक्ति का स्वरूप हैं।** हरिप्रसादस्वामी ने दासत्व भक्ति पर बहुत ज़ोर दिया है...*

इस ब्रह्मांड में दो प्रकार की विद्या है– परा और अपरा। परा मीन्स स्पीरीच्युअल, अपरा मीन्स मटीरियालिस्टिक। मटीरियल सायन्स और स्पीरीच्युअल सायन्स। मटीरियल सायन्स बाह्य रूप से हमें दिखाई पड़ता है। लेकिन, आध्यात्मिक विद्या जो है, वो साधु के संग से ही डॅवलप होती है। उसके बिना नहीं होती। श्रीमद् भगवद् गीता से नॉलेज होती है, वेद, उपनिषद् आप सब सीख सकते हो, बोल भी सकते हो, कथा भी कर सकते हो, लाखों लोगों को समझा भी सकते हो। लेकिन, परा विद्या दर्शाती है कि हमारी आत्मा के साथ जन्म-मरण का चक्कर जुड़ा हुआ है। जब हमें खुजली होती है, तो हम खुजाते हैं। फिर जब ज़्यादा खुजली आती है, तो मॅडिकल सोप-क्रीम वगैरह लगाते हो। फिर भी वह होती ही रहती है। सोचो कि आप सफ़ाई करते हो, फिर भी खुजली कहाँ से आती है? वो खुजली ब्लड में है। ब्लड में जो कमी है, वह निकाल दोगे तो खुजली अपने आप चली जायेगी।

*यूं आप कितना भी तप, व्रत, दान करो, यह करना है-नहीं करना ऐसा नहीं है। पर, जन्म-मरण का जो रोग है, वो टालने में वह काम नहीं आयेगा। तो, कैसे टलेगा? इसे कहते हैं– वासना, आसक्ति, डिज़ायर। पुत्र की-कुटुंब की, धन-पैसे की, मान की डिज़ायर होती है। ये तीन प्रकार की डिज़ायर जन्म-मरण का हेतु बन जाती है। वो कोई तप, व्रत, दान से नहीं टलेगी। **शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज ने जो अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना का प्रवर्तन किया है, वह हमारे लिये वासना टालने का बहुत बड़ा उपाय बताया है।** भगवान जिन्हें हम परोक्षभाव से पूजते हैं, वे प्रभु मानव रूप में साधु द्वारा मिलने चाहिये। उनके साथ आपको प्रेम-हेत हो जाये– मैं तुम्हारा और तुम मेरे ऐसा भाव हो जाये, उसी सॅकण्ड से आपकी वासना चली जायेगी।*

याद रखना ***गुरुजी ऐसे प्रभुधारक संत हैं, तो आप सबकी वासना चली गई। जन्म-मरण का चक्कर छूट गया।***

पृथ्वी पर हाईएस्ट शिखर क्या है? एवरेस्ट! यूं स्पीरीच्युअल सायन्स में हाईएस्ट शिखर क्या है? गुणातीतभाव, दासत्वभाव, साधुता –हाईएस्ट शिखर है! ***साधुता और दासत्व जिसके पास है, ऐसे साधु में प्रभु अखंड विराजमान होते हैं। हरिप्रसादस्वामी ऐसे प्रभुधारक संत थे। दादुकाका- पप्पाजी प्रभुधारक संत थे। ये तीनों की प्रसन्नता के पात्र ये गुरुजी हैं।*** *तो, गुरुजी भी प्रभुधारक संत हैं। उनसे जुड़ जायेंगे, तो हमारी आत्मा की वासना निकल जायेगी और हम जन्म-मरण के चक्कर से निकल जायेंगे।*

सोचते हैं कि फिर क्यों मानव देह में आना पड़ता है? वो इसलिये आना पड़ता है कि जब तक गुरुजी के रूप नहीं बनेंगे, तब तक भगवान हमें लायेंगे। मानो आप टेन्थ स्टान्डर्ड में पढ़ते हो, आपके फाधर का गुजरात में ट्रान्सफर हुआ। तो गुजरात आकर सी.बी.ए.सी. की बजाय फर्स्ट स्टान्डर्ड से पढ़ना पड़ेगा क्या? वहाँ टेन्थ स्टान्डर्ड में थे, तो यहाँ भी उसी में एड्मीशन मिलेगा। इसी तरह देह बदल कर भी, आप जहाँ तक थे वहाँ तक पहुँचे होंगे। फिर ऐसे साधु के जोग में आगे साधना कन्टीन्यू रहेगी। जब हमारा देह का भाव निकल जायेगा, तब प्रभु हम सबको गुणातीत बनायेंगे। इसलिये निश्चिंत रहना हम प्रभु के साथ ही आने वाले हैं।

प्रगट की उपासना वाले को यह फायदा हुआ कि उसकी मौत मर गई। गुजरात में छः करोड़ की बस्ती है, अनंत प्रकार के फियर हैं। लेकिन बड़ा फियर है मृत्यु का। कोरोना होगा तो मर जायेंगे, ऐसा डर लगता है। प्रीकॉशन लेना है, मास्क पहनना है, डिस्टन्स रखना है, हाथ धोना है – वो तो करना है; लेकिन डरना नहीं है।

यह देह जब भी छूटेगा, तो अक्षरधाम में जायेंगे–निश्चिंत रहना। स्वामिनारायण भगवान ने ऐसे साधु के योग में रख कर हमें अभय बना दिया... वे बताते हैं कि भयरहित रहो, मेरे आश्रय में हो, भगवान सर्वोपरि हैं। उनके शरणागत बन गये, तो डरो मत। मैं आपके पीछे हूँ, भगवान की शक्ति आपके पीछे है। मोदी साहेब कैसे निश्चिंतता से चलते हैं, क्योंकि उनके आगे-पीछे कमान्डर हैं। क्या किसी की मज़ाल है कि उनके नज़दीक पहुँच जाये... भगवान के पास रहेंगे, तो वे अनिष्ट तत्त्वों को हमारे पास आने नहीं देंगे। यह भगवान की सर्वोपरिता है। हमें भगवान के साथ जुड़े रहना है... हम भगवान के साथ, गुरुजी के साथ निर्दोषभाव से जितना जुड़े रहेंगे, इतने प्रोटेक्टेड हैं। गुरुजी की स्मृति और आज्ञा में रहना, उनके कार्य में जुड़े रहना।

भगवान के साथ जुड़े हो, तो निश्चिंत रहो। भगवान सब करेंगे, व्यवहार भी करेंगे, प्रोटेक्शन भी करेंगे। सब कुछ भगवान करेंगे।

तो, आप बहुत भाग्यशाली हैं। 1967 में काकाजी ने गुरुजी को आज्ञा करी कि दिल्ली जाओ। दिल्ली जाने की गुरुजी की ज़रा भी मरज़ी नहीं थी। तब दिल्ली में सत्संग करने के लिये कोई भक्त ही नहीं था। गुरुजी सोचते थे कि दिल्ली जाकर मैं क्या करूँगा? लेकिन, काकाजी को प्रभु का स्वरूप मानते थे, तो उनकी आज्ञा से दिल्ली आये। काकाजी तो देखते थे कि दिल्ली में आप सब हैं। ***आप सबको भगवान ने गुरुजी की भेंट दी है। तो, गुरुजी का जतन करना हमारी भक्ति है। जतन करना मीन्स उनकी आज्ञा में रहना। उन्हें जो प्रिय है, वो करना। उनकी जो लाइकिंग है, वो अपनी बनाना और अपनी लाइकिंग छोड़ देना।***

आप सब करते हो। ये बहनों को बहुत-बहुत धन्यवाद। ***हमारी आनंदी दीदी*** *और बहनों ने सभी में माहात्म्य का सिंचन किया है।*

गुरुजी के सान्निध्य में रहे हमारे मल्कानी अंकल को याद करना पड़े। वे भक्त हृदय थे। वे कहीं फॉरेन भी जाते, तो रोज़ सुबह गुरुजी को फोन करते थे। तब इतना समाज नहीं था, मंदिर भी नहीं बना था। मंदिर बनाने में मल्कानी अंकल ने हंड्रेड पर्सेन्ट गुरुजी को हेल्प किया। आप सब गुरुजी के लाड़ले हैं... गुरुजी हों तो अग्रवालजी, विजयपालजी वगैरह का दर्शन होगा ही, यह निश्चित है। कैसे बिज़नेस करते हैं, संसार में कैसे रहते हैं, वो मालूम ही नहीं पड़ता। गुरुजी भी आनंद में दिखें, तो सबको लगता है कि आप साथ में होंगे। आप सबके प्रति उनका इतना प्रेम और आशीर्वाद है। ***दिनकरभाई, गुरुजी, भरतभाई हमारे लिये काका का स्वरूप हैं।***

हरिप्रसादस्वामी के साथ गुरुजी को बहुत प्रेम। प्रेमस्वामी भी गुरुजी की सेवा में रहते थे...

इस प्रसंग पर आप लोग आये, बहुत खुशी हुई। आपके दर्शन और सेवा का मौका मिला, भगवान की बहुत कृपा मानते हैं। कोरोना काल में गुरुजी और मुझे तो एक कॅबिन में फिट कर दिया। कल ही मैं सोखड़ा आया, वर्ना इस बिल्डिंग से बाहर नहीं जाता। दस-पंद्रह दिन में मंदिर दर्शन करने जाता हूँ। बस हम पाँच-छः जने यहाँ रहते हैं। अश्विनभाई भी यहाँ नहीं आते, बाहर से चले जाते हैं। इस डेढ़ साल में अंदर तो कोई नहीं आया। गुरुजी और सेवक ही अंदर आये हैं। गुरुजी अंदर आये तो आशीर्वाद मिल गया-सब सेनिटाईज़ हो गया...

गुरुजी की प्रसन्नता प्राप्त कर लो। जीवन का पूरा आनंद तन, मन, धन और आत्मा से प्रभु आपको दें, ऐसी मेरी प्रार्थना... विजयपालजी के घर स्वामीजी और हम रहते थे, तो ऐसा महसूस होता था कि अपने घर में ही रहते हैं। ***गुरुजी ने एक आत्मीय समाज खड़ा कर दिया है।*** *काकाजी ने सर्वदेशीय समझ की बहुत बातें की हैं।* ***पूरे गुणातीत समाज में सर्वदेशीयता का दर्शन करना है, तो हमारे माणावदर और दूसरा दिल्ली सॅन्टर में जाओ,*** *तो तुम्हें हो जायेगा। गुरुजी ने ऐसा समाज तैयार किया है।* ***काकाजी जो चाहते थे, वही भक्ति आपके द्वारा गुरुजी करवा रहे हैं।***

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया–

...वॅकेशन में बापा हमें विचरण में घूमाने के लिये ले जाते थे। जब लौटते थे, तो बापा कहते – चलो, भमली भरीने जाओ। भमली यानि दिमाग़ की छोटी मटकी। इस तरह आज साहेब हमें भमली भर कर भेज रहे हैं। वैसे इन्होंने कोई नई बात नहीं की। जो बात करी उसका सुर एक ही है कि हमें जो काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी मिले हैं, इन्होंने हमें जो राह बताई है... जैसे प्रेमस्वामीजी के लिये साहेब ने कहा– ***स्वधर्म, मर्यादा और सर्वदेशीय सुहृदभाव रखेंगे, तो हमें और कोई साधना करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।*** *यह भी कह रहे थे कि जैसे अन्य आश्रमों में होता है, ऐसे हमें कभी कोई ध्यान, ज्ञान या अष्टांगयोग करते हुए देखते नहीं हैं। मोगरी के अंदर दाख़िल होते हैं, तो सर्कल पर वो सारे पोस्चर्स बताये हैं। दिल्ली एयरपोर्ट पर भी इस तरह का है। ऐसी कोई फ़िज़ीकल एक्सरसाइज़, ऐसा कोई योग हमें नहीं करना है। लेकिन,* ***सबसे कठिन साधना प्रगट प्रभु के संबंध वालों के साथ आत्मीयता और सुहृदभाव से जुड़े रहना, उसकी क्रिया हमें जँचे, उसके स्वभाव हमें जँचे, उसका टोकना हमें जँचे।***

*ऐसा तंत्र रखने के लिये बापा ने हर जगह फॅक्टरियाँ खड़ी की हैं। ये बात **पप्पाजी** बहुत शुरुआत में हमें करते थे। **काकाजी** भी कहते थे – ये सब हमारी ट्रान्स्फोर्मेशन की फॅक्टरिज़ हैं। उसमें से हम पूर्णतः क्रीस्टल क्लीयर निकल जायें, ऐसा आज साहेब आशीर्वाद दें।*

आशीर्वाद प्राप्त करके सभी ने 'योगी प्रसाद' में प्रसाद लिया और फिर 'नॅचर क्योर' गये। सायं चार बजे अधिकतर मुक्त बस से और सवा पाँच बजे प.पू. गुरुजी गाड़ी से वडोदरा एयरपोर्ट के लिये निकले। यहाँ से एयर इंडिया की उड़ान संख्या AI 820 से दिल्ली लौटे।

प.पू. गुरुजी ने मन में सोचा था – *7 अगस्त को प.पू. स्वामीजी की त्रयोदशी निमित्त मुझे फिर हरिधाम जाना ही है।* लेकिन, प.पू. गुरुजी की आयु और स्वास्थ्य देखते हुए प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने मना कर दिया था – *अब आप मत आना।*

सो, **7 अगस्त** को **गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति दिन एवं प.पू. स्वामीजी की त्रयोदशी निमित्त प.पू. गुरुजी की निश्रा में 'कल्पवृक्ष हॉल' में सीमित मुक्तों ने भजन संध्या का लाभ लिया।** एक दिन पहले प.पू. दिनकर अंकल और पू. घनश्यामभाई अमीन से वीडियो कॉल पर प.पू. गुरुजी की बात हुई थी, तो प.पू. गुरुजी ने उन्हें सहज ही कहा कि इस बार आप दिल्ली नहीं आयेंगे? सो, 7 अगस्त को वडोदरा में प.पू. स्वामीजी की त्रयोदशी की महापूजा में भाग लेने के बाद, प.पू. दिनकर अंकल, पू. घनश्यामभाई अमीन, पू. अश्विनभाई (पवई), पू. किशोर मास्टर्स के साथ सरप्राईज़ में रात को नौ बजे दिल्ली मंदिर आये। अचानक उन्हें देखकर प.पू. गुरुजी की खुशी का ठिकाना नहीं था। भजन संध्या समाप्त होने पर **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशीर्वाद देते हुए कहा –

आज बहुत आनंद हो रहा है। कल घनश्यामभाई और हम सबने गुरुजी को फोन किया था, तो गुरुजी ने घनश्यामभाई से कहा – आपने वादा किया था कि 2020 में आप यहाँ आयेंगे, पर नहीं आ पाये थे और अब 2021 भी क्या ऐसे ही चला जाएगा? उस समय हम ट्रेन में थे। हमने सोचा कि ऐसा मौका कब मिलेगा? सो, हमने दिल्ली आने का प्रोग्राम बनाया। वर्ना आज तो हम वशीभाई के साथ पवई लौटने वाले थे। सोनाबा-कांतिकाका के जरिये घनश्यामभाई के साथ गुरुजी का एक ख़ास संबंध है। मुझे भी हुआ कि 2020 में तो मैं आया था, पर 2021 का भी एक सेरा लगा दूँ। 2022 में तो कोरोना शायद इतना ज़ोर नहीं करेगा, सो तब फिर आना होगा।

*कोरोना की जो नेगेटिव एनर्जी है, उससे ऊपर **हरिप्रसादस्वामीजी की पॉज़ीटिव एनर्जी खूब पावरफुल है।** सारी दुनिया से हरिभक्त हरिधाम आए। गुरुजी भी दो बार गए और इस बार तो बहुत नज़दीक से साहेब दादा के पास बैठने को मिला।*

*जिन्होंने एक या दो वैक्सीनेशन ले लिया है, उससे सेफ्टी तो है। मगर मास्क पहनने की ज़रूरत इसलिए है कि हम मैसेन्जर बनकर किसी और को कोरोना ना दें और... **गुरुजी को हमें हर तरह से संभालना है-कॅयर करनी है।***

*आज दिल्ली में स्वामीजी के चरणों में भजन संध्या हो रही है। पवई में भी सब भक्त भजन संध्या कर रहे हैं। अन्य सब जगह पर भी भजन संध्या हो रही है। **स्वामीजी हमारे साथ हैं ही, वे गए ही नहीं हैं।** काकाजी तो*

बार-बार कहते थे – हम एक हैं। उनका एकत्वभाव देखा है। अब आगे साहेब दादा, गुरुजी, प्रेमस्वामी और जो भी भगवान को जितना रखें, उनके अंदर स्वामीजी हैं।

1986 जनवरी की सभा में सत्यमित्रानंदस्वामीजी ने काकाजी से पूछा था –

हम बॅप्स में जाते हैं, तो वहाँ एक प्रमुखस्वामीजी लीडर हैं, यहाँ तो बहुत लीडर दिखते हैं। यहाँ दरअसल लीडर कौन है ?

तब काकाजी ने कहा – ***जो भगवान रखे वो लीडर !***

भगवान तो कोई बन नहीं सकता है, मगर जिसे भी गुणातीत स्वरूप बनना है, उसके लिये यहाँ ओपन इनवीटेशन है। काकाजी तो कहते थे – ये टेकनीक है, जिसे हम सर्पोट भी करते हैं।

स्वामी की बात में भी बताया है – भगवान का धाम गुणातीत है और सबको गुणातीत बनाना है।

काकाजी भी कहते थे कि ऐसा सबको बनना है। इस भावना से सबके अंदर हम काकाजी और गुरुजी का दर्शन करें। हरेक के अंदर वशीभाई-भरतभाई और सब गुणातीत स्वरूपों का दर्शन करें। यह हमारी साधना है। ***काकाजी तो बार-बार दोहराते थे – मेरे सामने आया हुआ मुक्त ब्रह्म की मूर्ति माना जाये, अखंड दिव्य माना जाये।***

कल या परसों मैंने पवई में कहा था – ***इस प्रार्थना में भी अब थोड़ा एड करना पड़ेगा कि – मेरे सेलफोन में सुनाई या दिखाई देने वाला मुक्त भी ब्रह्म की मूर्ति माना जाये।*** *टॅक्नोलोजी की एडवांसमेंट से हम एक-दूजे के नज़दीक हैं ऐसा लगता है। हम यदि ऐसी भावना रखेंगे कि सामने वाले मुक्त में भी काकाजी हैं, तो फिर कोई बहस ही नहीं रहेगी, कोई आर्ग्युमेंट ही नहीं रहेगा। सब दिव्य-दिव्य लगेगा।*

तो आज गुरुजी के चरणों में हमारी यही प्रार्थना है कि हे गुरुजी, काकाजी ने हमें जो परोसा है, वो आपने तो आत्मसात् किया है। सो आज आप हम सबको आशीर्वाद दीजिए कि हम सब ऐसे ब्रह्मरूप होकर, परब्रह्म की भक्ति करके आनंद-मगन रहें...

अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्दान दिया–

...दिनकरभाई, घनश्यामभाई, अश्विनभाई और किशोरभाई मास्टर्स आए, तो एकदम आनंद प्रगट हो गया। काकाजी के पास ऐसा होता था कि कोई कितना भी मुँह लटकाया या मायूस जाये, पर उनके पास एकदम प्रफुल्लित हो जाता। काकाजी के रूम में जाता, तो हँसता हुआ बाहर आता था। ***'आनंदोब्रह्म'*** *- ब्रह्म का यह लक्षण है। स्वामीजी ऐसे हैं। विरासत में हमें 'प्रेमस्वामी' को देकर गये हैं! प्रेमस्वामीजी ने एक-दो बहुत अच्छी बातें बताईं, जो उनके जीवन में भी नज़र आती हैं।*

1. प्रगट की निष्ठा और उन्हें प्रत्यक्ष मानकर जीओ।

2. उनके भक्तों के साथ सुहृदभाव और उनके प्रति निर्दोषबुद्धि।

ये बातें साहेब ने भी दोहराई और ये ***बातें पकड़े रखेंगे, तो हमें महसूस हो जाएगा कि हमारे प्रभु धरती पर से गए ही नहीं हैं।*** *यहाँ हरेक को ये प्रतीति तो है ही है।*

पर, एक बात पर अटक जाते हैं। वो है भक्तों के साथ सुहृदभाव से रहना। हम बोलते हैं – संप-सुहृदभाव-एकता,

संप-सुहृदभाव-एकता। एक बार स्वामीजी ने बताया था– संप यानि क्या? कोई भी कार्य बिना किसी बहस सब मिलकर कर लें वह। सुहृदभाव भी उसे कहा जाए। लेकिन कठिन है 'एकता'। एकता में दोष नज़र नहीं आएगा। क्योंकि एकता में हम यह मानते हैं कि सामने वाले में मुझे जो दोष नज़र आता है, वो मेरा दोष है। एक बार मेरी पूजा में रखा हुआ मिरर उठा कर पप्पाजी ने बताया था– मिरर अपने सामने रखोगे, तो तुम खुद दिखाई दोगे; मिरर मैं अपने सामने रखूँगा, तो मैं दिखाई दूंगा। मिरर एक ही है। पर, उससे खुद के स्वभाव, प्रकृति, दोष देखने हैं, दूसरों के नहीं।

दिनकर अंकल से आज यही आशीर्वाद लेना है कि वे हम सबके लिए संकल्प, प्रार्थना और भजन करते रहें। काकाजी जिस नक्शेकदम पर चले और हमें चलवाया, उस पर सारा गुणातीत समाज चले। स्वामीजी इसी नक्शेकदम पर चलते रहे और हमें चलने के लिए आग्रह रखते थे। अक्षरविहारीस्वामीजी भी इसी नक्शेकदम पर चले और हरेक को इसी राह पर चलने के लिए कह गए। उन्होंने हमारे लिये रास्ता बनाया।

तो, हम अब इधर-उधर न होते हुए, मतलब –और तो कहीं जाने नहीं वाले; गुणातीत समाज में ही रहने वाले हैं। लेकिन अपने मन के चक्कर में – 'ये ऐसा, वो ऐसा'– न करें। हम बोलते हैं लेकिन ऐन मौके पर मानना बड़ा मुश्किल पड़ जाता है। यूं कहें कि मानते ही नहीं हैं कि ***हरेक के कर्ता-हर्ता, प्रेरक-प्रवर्तक हमें मिले हुए प्रगट प्रभु हैं।***

हमें मिले हुए मतलब– काकाजी ने एक बार मुझसे पूछा था –

तुम्हें कौन मिला? तुम्हें दीक्षा किसने दी?

फिर खुद ही समझाया– तुम्हारे दीक्षा गुरु योगीजी और शिक्षा गुरु मैं! हमें उनकी ऐसी बातें खूब पसंद आती - जँचती थीं, अच्छी लगती थीं, खुश होते थे– आनंद आता था, लेकिन यह नहीं सोचते थे कि मेरी शिक्षा के लिए काकाजी यह कह रहे हैं। मुझे सिखाने के लिए मुक्तों द्वारा मुझे मेरा दर्शन करवा रहे हैं। यूं मानकर काकाजी को 'धन्यवाद' करना चाहिए।

कोई हमें हमारी मनपसंद चीज़ दे जाये या हमारा कुछ फुलफिलमेन्ट कर दे, तो हम 'धन्यवाद' (थैंक्स) कहते हैं। बोलने में यह आसान है, लेकिन भीतर से उद्गार करे, तो ख्याल पड़ेगा।

मैंने एक बार बात करी थी कि हाथ जोड़ना हमारा 'कल्चर' है–संस्कृति है। अंग्रेज - अमेरिकन या रशियन शेक हेंड करते हैं। भारत - हिंदुस्तान के सिवाय हर जगह सब शेक हेंड करते हैं। एक हिंदुस्तान और पाकिस्तान दो ही ऐसे मुल्क हैं, जो एक - दूसरे के करीब जाकर गले लगते हैं। हम ऐसे ही गले नहीं लग सकते; अगर लगने भी जाएँगे, तो आंखों में पानी आ जाएगा।

गुणातीत समाज ***'आत्मीय समाज'*** *कहा जाता है। आत्मीयता 'आत्मा' का गुण है। 'प्रकृति-पुरुष' से पर का गुण है। आत्मीय समाज का मतलब – प्रकृति पुरुष से पर का ये समाज है। इसका मतलब कि ये पूरा समाज दिव्य है। इस मर्म को समझ कर हरेक मुक्त को दिव्य मानें।*

इससे आगे काकाजी कहते – दिव्य नहीं, उसे सत्य मानें कि वो जो कर रहा है वो सत्य है। यह मानना बड़ा कठिन है। हमें यदि किसी की कोई क्रिया नहीं जँचती है –अपने भेजे में नहीं उतरती है, तो हम बोल देते हैं – रहने दो न,

ये जो करे वो दिव्य है। इसका मतलब कि हमने उसे सत्य नहीं माना। लेकिन ***महाराज उसका चलने देते हैं, महाराज उसका प्रेरक बन कर कराते हैं। तो, उसमें हम क्यों इंटरप्ट करें? हम क्यों इंटरवेन करें?*** *अगर ऐसा मन हो भी, तो हम भजन करें – 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण... हे महाराज, मेरी ये सोच पर आप कंट्रोल लेकर आप मेरी सोच को सही दिशा में ले जाओ। मुझे भक्तों के स्वभाव, दोष, प्रकृति नहीं देखने।' काकाजी कहते थे –* ***'भगवान व भगवान के भक्तों के गुण देखना महापुण्य है,'*** *इसी तरह इनके दोष, स्वभाव, प्रकृति देखना पाप नहीं महापाप है। चार प्रकार के पाप बताये हैं–*

1. स्त्री हत्या, 2. बाल हत्या, 3. ब्रह्म हत्या, 4. गौ हत्या।

ये पांचवें पाप में हम न पड़ें। प्रगट की निष्ठा वाला हरेक भक्त दिव्य और सत्य हैं। हम सब सनातन रहने वाले हैं। दूसरे आएँगे मर जाएंगे, पर हम मरेंगे नहीं। जब तक हम संपूर्ण ब्राह्मीस्थिति को न पाएँ – ब्रह्मस्वरूप न बन जाएँ, हमारे प्रभु हमें कहीं न कहीं मानव योनि में ही रखेंगे... हमारा हाथ छोड़ेंगे नहीं।

संत का यही लक्षण है कि अंत तक यानि – चेतना जब तक ब्रह्मस्वरूप न हो जाए, उसके पीछे लगे ही रहेंगे। इसीलिए स्वामीजी गए ही नहीं हैं। उन्होंने जो समाज खड़ा किया वो पूरा समाज, एक-एक मुक्त छोटे-बड़े सब, आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, पूरे हरिधाम की कण-कण जब तक ब्रह्मस्वरूप न हो जाये, तब तक स्वामीजी धरती से जा ही नहीं सकते। *हम ये दिल से मानेंगे, तो इसकी प्रतीति स्वामीजी स्वयं हमें करा देंगे। इसके लायक हम बन जायें, इसके लिए हम प्रार्थना - भजन करते रहें, दिनकरभाई हमें ऐसे आशीर्वाद दे जायें यही प्रार्थना...*

यूँ, प.पू. गुरुजी ने प.पू. स्वामीजी जैसी गुणातीत विभूतियों को प्रगट व प्रत्यक्ष मान कर, पल-पल जीने की राह का मार्गदर्शन किया... मन का एक कोना भी यही कहता है कि प.पू. स्वामीजी भले ही स्थूलरूप से दृष्टिगोचर नहीं हैं, पर पवई मंदिर द्वारा गुरुहरि काकाजी के लिये रचित भजन की निम्न पंक्ति सहज ही याद आती है–

तुम तो यहीं कहीं काका, मेरे आस-पास हो; आते नहीं नज़र पर, मेरे साथ-साथ हो...

इसी प्रकार, **हे स्वामी! आप सदैव हम सबके आस-पास ही हो और आपके दिये गये आशीर्वाद भी शाश्वत् ही हैं।** आइये, वर्षों पहले गुरुपूर्णिमा निमित्त श्री अक्षपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका में **प.पू. स्वामीजी** द्वारा की गई निम्न ज्ञानगोष्ठि को उनका आशीर्वाद मान कर हम कृतकृत्य हों।

गुरुपूर्णिमा – *गुरु और शिष्य के संबंध को प्रगाढ़ करने का प्रेरणात्मक दिन है।*

इस दिन भक्तगण सामान्यतः केसर-चंदन, भेंट सामग्री-पुष्पार्पण इत्यादि नवधाभक्ति से 'गुरुपूजन' करता है; परंतु हमारे अनादि गुरु गुणातीत नये ही प्रकार का 'गुरुपूजन' करने की इच्छा व्यक्त करते हैं।

वे महाराज के रहने का भव्यस्वरूप हैं और अद्वितीय रूप से परब्रह्म में जुड़े हुए हैं।

संपूर्ण निराकार होकर, साकार भगवान को धारण करके भगवान की सेवा में वे खड़े हैं।

अनादि का सगुण - निर्गुण स्वरूप होने के बावजूद, उन्हें अपनी कोई अस्मिता नहीं।

सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य, प्रताप, बल, तेज इत्यादि में उन्हें कोई रस नहीं।

केवल महाराज ही उनका सर्वस्व, आधार और जीवन हैं।

स्वयं संकल्परहित होकर आश्रितों को 'संकल्प की बीमारी' से मुक्त करा कर,

केवल महाराज में ही जोड़ने के लिये वे विचरण करते हैं।

ऐसे संत स्थूल भक्ति से प्रसन्न होंगे क्या?

प्रकृति में से उत्पन्न हुए पदार्थों, सेवा, चाकरी, शोभायात्रा, शान-शौक़त या शिष्यों के छिछरे लगाव से

वे राज़ी होने वाले नहीं हैं!

परंतु, महाराज ने शिक्षापत्री के 116 वें श्लोक और वचनामृत लोया 7 में

ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करने का रहस्य दर्शाया है

और

वचनामृत प्रथम 44 में निर्देश भी किया है कि स्थूल – देहाध्यासी भक्ति करते भक्त की समझ वृथा है।

ऐसी भक्ति से जीव में तनिक भी बल नहीं आता - परिवर्तन नहीं होता - जन्म मरण के रोग टलते नहीं!

तो क्या स्थूल नवधाभक्ति नहीं करनी चाहिये?

यह तो करनी ही, लेकिन उसका हेतु प्रभु की प्रसन्नता ही हो,

तो संत धीरे-धीरे शुद्ध सर्वोपरि समझ दे देते हैं।

सो, हमारे गुरु को जो खूब पसंद है, वैसी भक्ति करने का आज संकल्प करें

और

उसके मुताबिक़ वर्तने की यदि रुचि रखेंगे, वह सर्वोत्कृष्ट पूजन किया कहा जायेगा

और

धाम, धामी व मुक्तों की सर्वोपरि सेवा भी यही कही जायेगी।

संत की रुचि के अनुसार यदि न वर्तें, तो 'गुरुभक्ति' कही ही न जाये।

आज उनकी मरज़ी क्या है? –

*(1) स्वामी की बात प्रकरण 2 की 57 के अनुसार संत के प्रति केवल वफ़ादारीपूर्वक जीवन जीना।
उन्हें राज़ी करने के लिये नात, जात, वर्ण, आश्रम, सगे-संबंधी, देह, इंद्रियों या अंतःकरण को
तनिक भी बीच में आने नहीं देना।*

(2) निष्ठा दृढ़ करनी और करवानी।

(3) आत्मीयता से सब कुछ करना, बाकी सब छोड़ देना।

*(4) गुरुभक्ति की आड़ में अन्य किसी विभूति को गौण करने की चेष्टा करना नहीं। सर्वदेशीय उठाव ही लेना।
और*

*(5) धीरज, धर्म और ज्ञान की कसौटी के समय खड़े हुए प्रसंगों या विपरीत माहौल में
'प्रत्यक्ष स्वरुप ही कर्ता-हर्ता है'–यह भूलें नहीं और 'स्वामी-स्वामी' करते हुए प्रत्यक्ष स्वरुपों का
बल लें।
इस हेतु वे खूब ही बल दें ऐसी प्रार्थना।*

गुणातीत ज्योत – प्रभुकृपा में प.पू. हंसा दीदी की निश्रा में ज्ञानगोष्ठि...

गुणातीत ज्योत – परम प्रकाश में प्रसाद...

पप्पाजी तीर्थ पर 'शाश्वत् धाम' के दर्शनार्थ...

चैतन्यदर्शी गुरुहरि पप्पाजी का प्राकट्य दिन!

1 सितंबर गुरुहरि पप्पाजी का प्राकट्य दिन! उनकी जीवनभावना थी –

'विचार, वाणी और वर्तन को एक होने दो।'

अर्थात् – हम भीतर में जो भी विचार करें, उसके विषय में केवल बोलें नहीं; बल्कि उस विचार को पहले अपने आचरण-वर्तन में लाने का प्रयत्न करें, तभी वह सबको अंतर तक स्पर्श करेगा।

गुरुहरि काकाजी हमेशा कहते– ***मेरा भाई बहुत प्रामाणिक!***

जीव की ऐसी दशा को भलीभाँति समझे हुए गुरुहरि पप्पाजी ने प.पू. बापा को कर्ता-हर्ता, साकार और सर्वोपरि मान कर ना केवल उनका यशगान किया, बल्कि उनके संबंध वालों के दोषों के समक्ष मौन रह कर, उन्हें दिव्य मानने की प्रेरणा दी।

गुरुहरि पप्पाजी बचपन से ही ध्येयनिष्ठ थे। जो भी कार्य करने का ठान लेते, उसे किसी भी तरह वे पूरा करते ही। जिस क्षण से उन्हें प्रतीति हुई कि वे केवल प.पू. बापा का प्रकाश हैं, उसी क्षण से 'स्व' की आहूति देकर, प.पू. बापा के सत्य संकल्प में याहोम हो गये। और तो और, उन्होंने अपने पल-पल के वर्तन से प.पू. बापा को सदैव जीवंत रखा। हम खूब भाग्यशाली हैं कि उन्होंने स्वयं गरज़ रख कर हमें अपने दर्शन, सेवा और समागम का अनमोल मौका दिया। तो, ऐसे चैतन्यदर्शी के प्रागट्य पर्व पर उनके आशीर्दान को शाश्वत् मान कर उनके श्रीचरणों में नमन करते हुए प्रार्थना करें–

हे पप्पाजी! हम प्रत्यक्ष स्वरूपों से कहते तो हैं – *हम जैसे भी हैं, आपके हैं...*

लेकिन दिल में सच्चाई न होने के कारण, कहीं न कहीं शंकित रहते हैं कि वाक़ई हम उनके हैं क्या? तो, गुरुहरि काकाजी द्वारा कराई प्रार्थना से याचना करें –

हे महाराज! हे स्वामी! हे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों! आपकी कृपा, आपकी दया, आपकी करुणा, आपकी शक्ति और आपके अनुग्रह से हमें सहज ही आपका बनाना...

सच, भगवान स्वामिनारायण के वरदान से, गुणातीत परंपरा के ज्योतिर्धरों की हमें जो अनमोल प्राप्ति हुई है, उन्होंने हमें जो आध्यात्मिक भोजन परोसा है, वो साधक वर्ग के लिये युगों-युगों तक संजीवनी बूटी समान बना है। आइये, **गुरुहरि पप्पाजी** के प्राकट्य पर्व पर, आशीर्दानरूपी उनकी निम्न बूटी से हमारी साधना को सुगम करें...

हम *जो साधना करने के लिये तत्पर हुए हैं, उसे करने के लिये तीन वाक्यों को ही जीवन आधार बना लेंगे, तो हँसते-खेलते स्थिति हो जायेगी। लाखों टन ज्ञान की बातें तो–वह तो तोता भी रट सकता है। प्रोफेसर्स लॅक्चर के लॅक्चर फाड़ते हैं। लेकिन उससे 'स्थिति' नहीं होती।*

ख़ूब विद्वान शास्त्री हो, पर यदि प्रत्यक्ष स्वरूप के प्रति की निष्ठा ना हो, तो शास्त्री की उपाधि का क्या फ़ायदा?

भले ही ज्ञान न हो, लेकिन प्रत्यक्ष स्वरूप के प्रति दिव्यभाव और निर्दोषबुद्धि रखे, उसे श्रेष्ठ भक्त कहा जाये।

स्त्री-पुत्रादि युक्त गृहस्थ भी प्रत्यक्ष स्वरूप का गुण ले, तो उसका कल्याण हो जाये।

महाराज के समय में पर्वतभाई ऐसी निष्ठा वाले थे। वे तीन देह और तीन अवस्था में मूर्ति देखते थे।

चौबीस घंटे मूर्ति देखना यानि–आँखें खुली रखते हुए भगवान और संत के संबंध वालों की महिमा समझना।

निष्ठा वाले भक्त के प्रकृति व स्वभाव देखे बिना, उसके प्रति अखंड अहोहोभाव और दिव्यभाव ही रहे।

महाराज व उनके संबंध वाले केवल दिव्य हैं–ऐसा चौबीस घंटे माना जाये। पर्वतभाई के लिए यही प्रभु की मूर्ति थी।

'फलां ऐसा है और वैसा है' – ऐसा सोच कर हम मुँह न फेरें, तब जानना कि भगवान में हमारी ***'अखंड वृत्ति'*** *है।*

किसी के प्रति तिरस्कार की भावना न हो। ग़लत मलिन विचार न हों–वह ***'मूर्ति'*** *कही जाये।*

स्वप्न में भी यदि यह बात दृढ़ रहे, तो समझना कि स्थूल और सूक्ष्म दोनों अवस्था में हमें भगवान का संबंध है।

कारण शरीर का तो महाराज ही जानते हैं। इस विषय में हमें चौधराहट नहीं करनी।

जब तक ये तीन बातें ईदम् न हो जायें, तब तक और कुछ रटना नहीं।

ये तीन बातें क्या?

1. *एक तो भगवान की ओर अखंड दृष्टि। भगवान की ओर देखते रहना, यानि आँखों से भगवान को देखते रहना ऐसा नहीं; बल्कि उनके भक्तों के प्रकृति-स्वभाव-दोष नहीं देखना। प्रसंग पर किसी मुक्त का कुछ चुभे तो महाराज से पूछना – महाराज! यह क्या है! मुझसे उसका तिरस्कार क्यों हुआ? ऐसे मलिन संकल्प क्यों उठ रहे हैं? यूँ भगवान की ओर दृष्टि रखना, लेकिन मुक्त के दोष नहीं देखना।*

ऐसी 'अखंड वृत्ति' से बढ़ कर अन्य कोई बड़ा साधन नहीं है।

2. *दूसरा क्या? तो, मुक्त के प्रति ज़बरन् दिव्यभाव पकड़े रखना कि वह जो भी कर रहा है वह **'दिव्य'** ही है।*
3. *तीसरा यह कि हो सके उतनी सेवा करना, पर कोई असेवा नहीं करना। जैसे कड़वे नीम के पेड़ में भी तो पानी डाला जाता है, उसी प्रकार संबंध वाले मुक्त के स्वभाव देखे बिना, अहोहोभाव से सेवा करनी। सेवा छोड़ नहीं देना। किस तरह वह राज़ी हो, ऐसी भावना रखना। 'ऐसे-वैसे चल जायेगा' यह नहीं रखना। गरज़ से सेवा करना और दिव्यभाव रख कर झुक जाना।*

इन वाक्यों को जीवन में ढाल लेना। लिख कर रोज़ पढ़ना, ईदम् कर लेना। जाग्रत में स्थूल देह से यूं जियेंगे, तो सूक्ष्म अवस्था में भी जीया जायेगा। स्वप्न में भी ऐसा ही ख्याल रहेगा कि यही साधना है–यही मूर्ति है।

स्पष्ट रुप से यह समझ कर सभी जीते हो जायें और सभी को यह ईदम् हो जाये, यही प्रत्यक्ष धाम, धामी और मुक्तों से प्रार्थना।

व्रतोत्सवसूची

(1)	**दि. 1.9.'21,**	**बुधवार**	**–**	**गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन**
(2)	दि. 3.9.'21,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	**दि.10.9.'21,**	**शुक्रवार**	**–**	**गणेश चतुर्थी**
(4)	दि. 17.9.'21,	शुक्रवार	–	जलझीलनी एकादशी, व्रत
(5)	दि. 19.9.'21,	रविवार	–	अनंत चतुर्दशी
(6)	दि. 21.9.'21,	मंगलवार	–	गुरुहरि पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
(7)	दि. 24.9.'21,	शुक्रवार	–	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व
(8)	**दि.30.9.'21,**	**गुरुवार**	**–**	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. महंतस्वामीजी की प्राकट्य तिथि**
(9)	दि. 1.10.'21,	शुक्रवार	–	भगवान स्वामिनारायण एवं ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का स्मृति पर्व **प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य दिन**
(10)	दि. 2.10.'21,	शनिवार	–	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
(11)	दि. 3.10.'21,	रविवार	–	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी एवं गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
(12)	दि. 4.10.'21,	सोमवार	–	अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व

प.भ. निमेषभाई के 'गुरुजी फार्म' को पावन करते...

अनुपम मिशन - मोगरी के नवनिर्मित मंदिर में
प.पू. गुरुजी द्वारा श्री ठाकुरजी की 'राजभोग आरती'...

नवनिर्मित मंदिर की दिव्य स्मृति...

समाधि स्थल पर दर्शन– प्रदक्षिणा...

गुरुजी प्रभुधारक संत हैं, तो आप सबकी वासना चली गई।
जन्म-मरण का चक्कर छूट गया...

– संतभगवंत साहेबजी

साहेब हमें 'भमली' भर कर भेज रहे हैं...

– प.पू. गुरुजी

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052